अध्याय 15

वृहत्तर भारत

प्राचीन भारतीय इतिहास का एक रोचक पक्ष भारत की सीमाओं से परे के देशों के जीवन और संस्कृति पर भारत का प्रभाव होना है। इन देशों में भारतीय दर्शन और विचार का प्रवेश हुआ, जिसके फलस्वरूप वहाँ भारतीय संस्कृति पल्लवित हुई और वह एक प्रकार का वृहत्तर भारत बना गया।

विश्व में अनेक देश हैं जहाँ हमारे देश की संस्कृति का प्रभाव उनके समाज के हर क्षेत्र में आज भी दिखता है। इन देशों के साथ हमारे संबंध हजारों साल पहले ही बन चुके थे। यह एक विचार का विषय है कि उन क्षेत्रों के साथ भारत के सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनैतिक एवं सामाजिक संबंध कैसे बने? हमने कभी भी विश्व के अन्य देशों पर अपने प्रभाव के लिए ताकत का प्रयोग नहीं किया। हमने अपनी सांस्कृतिक ताकत व अपने ज्ञान से दुनिया के देशों पर अपना प्रभाव जमाया।

भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रचार

संस्कृति व ज्ञान–विज्ञान

भारत की सभ्यता व संस्कृति विश्व में उन्नत रही है। सम्राट हर्ष के काल तक भारत कला, साहित्य, शिक्षा और विज्ञान में सम्पूर्ण विश्व में आगे था, इसलिए प्राचीन काल में भारत विश्व गुरु कहलाता था। भारत में नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला और गया के विश्वविद्यालय शिक्षा के बड़े केन्द्र थे। भारत के अलावा चीन, जापान, तिब्बत, श्रीलंका, कोरिया, मंगोलिया आदि देशों के विद्यार्थी भी यहाँ ज्ञान प्राप्त करने आते थे। भारत की प्रसिद्धि सुनकर अनेक विदेशी यात्री भी इस काल में यहाँ आए। उनमें फाह्यान, ह्वेनसांग, और इत्सिंग नामक चीनी यात्री प्रमुख थे। ये सब विदेशों में भारतीय संस्कृति के संवाहक थे। इन्होंने यहाँ रहकर हमारे ज्ञान–विज्ञान का अध्ययन किया। अपने देश लौटते समय वे अपने साथ भारत की संस्कृति, साहित्य और ज्ञान अपने साथ ले गए। इन्होंने भारतीय ग्रंथों का अपनी भाषा में अनुवाद किया। इस प्रकार भारतीय संस्कृति का विदेशों में खूब प्रचार–प्रसार हो गया।

प्राचीन समय में भारत में उद्योग एवं व्यापार अपने चरम सीमा पर थे। भारत में बनी वस्तुओं की विदेशों में भारी मांग थी। यहाँ का बहुत सा माल विदेशों में निर्यात किया जाता था। यह व्यापार जमीन व समुद्र दोनों ही रास्तों से होता था। भारत से मलमल, छींट, रेशम व जरी के वस्त्र; नील, गरम मसाले, लोह–इस्पात की वस्तुएँ आदि भारी मात्रा में निर्यात की जाती थी। यह माल जावा–सुमात्रा आदि दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों तथा पश्चिम व मध्य एशिया से आगे तक भेजा जाता था। इन क्षेत्रों में व्यापारियों का आना–जाना लगा रहता था। कुछ क्षेत्रों में भारतीय लोगों ने अपनी बस्तियाँ भी बसा ली। इस प्रकार वस्तुएँ ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति, ज्ञान–विज्ञान, साहित्य, धर्म और दर्शन भी वहाँ पहुँचा।

यह भी जानें–अग्नि पुराण के अनुसार जम्बूद्वीप से अलग एक 'द्वीपान्तर भारत' का अविर्भाव हुआ। यही भाव आधुनिक शब्द इण्डोनेशिया से अभिव्यक्त होता है। नेशिया का अर्थ द्वीप है, इसलिए इण्डोनेशिया का अर्थ 'भारतीय द्वीप' होता हैं। यह एक इस्लामिक देश है जहाँ भारतीय संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है।

बर्मा, स्याम, मलय प्रायद्वीप, कम्बोडिया, सुमात्रा, जावा, बोर्निया, बाली, अन्नाम, सुवर्णदीप, हिन्द–चीन आदि स्थानों पर भारतीय भाषा, साहित्य, धर्म, कला आदि के प्रभाव वहाँ के जन–जीवन में आज भी देखने को मिलते हैं। इन स्थानों पर मिलने वाले प्राचीन अवशेषों से वहाँ की संस्कृति और जन–जीवन पर भारत के गहरे प्रभाव और संबंधों का पता चलता है। साथ ही भारत की सभ्यता और संस्कृति के विस्तार का भी पता चलता है।

जब विश्व, मुख्यतः एशियाई देश भारत के सम्पर्क में आए तो उस समय उनमें सभ्यता के सभी स्तरों के लोग थे। कम्बोडिया के नंगे रहने वाले अर्ध जंगली लोगों से लेकर सभ्यता की आदिम अवस्था से आगे बढ़ जाने वाले जावा के निवासियों तक उसमें शामिल थे। इन सबने भारतीय सभ्यता की विशेषताओं को अनुभव किया और बहुत बड़ी सीमा तक उसे अपना लिया। भारत की भाषा, साहित्य, धर्म, कला और राजनीतिक तथा सामाजिक संस्थाओं ने इन लोगों पर सांस्कृतिक प्रभाव जमाया और वहाँ की

मानचित्र पैमाने पर आधारित नहीं हैं।

गतिविधि–

इस मानचित्र के वर्णित स्थानों के बारे में यह जानने का प्रयत्न करें कि आज भी हमारी संस्कृति का प्रभाव किन–किन क्षेत्रों में तथा कैसा रहा है?

स्थानीय संस्कृति के साथ मिलकर एक नई संस्कृति को जन्म दिया।

भाषा और साहित्य

संस्कृत में लिखे गये अभिलेख बर्मा, स्याम, मलय प्रायद्वीप, कम्बोडिया, अन्नाम, सुमात्रा, जावा और बोर्नियो में पाये गए हैं। इनमें से सबसे प्राचीन लेख ईसा की दूसरी–तीसरी शताब्दी के हैं। वहाँ संस्कृत का प्रयोग 1000 वर्षों से अधिक काल तक होता रहा। हिन्द–चीन के अधिकांश भागों में आज भी पालि भाषा जो संस्कृत से निकली हुई है, दैनिक प्रयोग में आती है।

चम्पा में 100 से अधिक संस्कृत अभिलेख मिले हैं। कम्बुज में मिले अभिलेखों की संख्या न केवल इनसे अधिक है वरन् वे साहित्य की दृष्टि से भी उच्च कोटि के हैं। वे सुन्दर काव्य शैली में लिखे गये हैं, जो किसी भी भारतीय के लिये गौरव की बात हो सकती है। यशोवर्मन के चार अभिलेख क्रमशः 50, 75, 93 और 108 छन्दों के हैं। राजेन्द्रवर्मन का एक लेख 218 छन्दों और दूसरा 268 छन्दों का हैं।

इन अभिलेखों के रचयिताओं ने संस्कृत साहित्य के प्रायः सभी छन्दों का प्रयोग किया हैं। उनमें संस्कृत व्याकरण, अलंकार और छन्द शास्त्र के विकसित सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञान व्यक्त होता है। इनमें रामायण, महाभारत, काव्य, पुराण और अन्य भारतीय साहित्य का घनिष्ठ परिचय और भारतीय दर्शन तथा आध्यात्मिक विचारों की गहरी पैठ प्रकट होती है। वे भारत के विभिन्न सम्प्रदायों के धार्मिक एवं आनुश्रूतिक धारणाओं से भी ओत–प्रोत हैं। यह सब इस सीमा तक है कि हम उसे ऐसे समाज के लिए आश्चर्यजनक ही कहेंगे जो भारत से हजारों मील दूर रहा हो। इन अभिलेखों में वेद, वेदान्त, स्मृति तथा ब्राह्मण, बौद्ध और जैन धार्मिक ग्रन्थों, रामायण, महाभारत, काव्य, पुराण, पाणिनि के व्याकरण और पतंजलि के महाभाष्य तथा मनु, वात्स्यायन, विशालाक्ष, सुश्रुत, प्रवरसेन, मयुर और गुणाठ्य की रचनाओं के अध्ययन का स्पष्ट उल्लेख पाया जाता है।

राजा और बड़े अधिकारी भी साहित्यिक कार्यों में नेतृत्व करते थे। चम्पा के तीन नरेशों के विद्वान् होने का उल्लेख मिलता है। उनमें से एक तो चारों वेदों का ज्ञाता था। कम्बुज नरेश यशोवर्मन के बारे में कहा जाता है कि वह शास्त्र और काव्यों का रसिक था।

जावा में लोगों ने न केवल संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया वरन् उन्होंने स्वतः विस्तृत साहित्य का सृजन भी किया। महत्त्वपूर्ण रचनाओं में रामायण और महाभारत का जावी भाषा में गद्य अनुवाद उल्लेखनीय है। हमारे स्मृति और पुराणों के तरह के शास्त्रों की भी रचनाएँ हुई। उस काल की कुछ रचनाएँ इतिहास, भाषाशास्त्र और आयुर्वेद विषय पर भी पायी जाती है। विषय, गुण और मात्रा की दृष्टि से जावा के साहित्य में प्राचीन भारतीयों का यह योगदान एक उल्लेखनीय कार्य था। भारत के बाहर कहीं भी भारतीय साहित्य का इतना लाभपूर्ण न तो अध्ययन हुआ है और न ही उसका इतना महत्त्वपूर्ण परिणाम ही रहा।

यही बात बौद्ध पालि साहित्य के संबंध में बर्मा और सिंहल पर चरितार्थ होती है। इन दोनों देशों में बौद्ध धर्मग्रंथों में पालि भाषा अपनायी गयी, जिसने वहाँ नये साहित्य को जन्म दिया और आज तक वह निरन्तर चली आ रही है।

यह भी जानें –

भारत और चीन के सम्बन्धों का लम्बा इतिहास दूसरी शती ई. पूर्व से आरंभ होता है। भारत के विभिन्न भागों से चीन में जाकर अनेकानेक भारतीय विद्वानों ने संस्कृत ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद किया। बौधिरूचि नामक विद्वान् 693 ई. में चालुक्य राजसभा में नियुक्त चीनी राजदूत के साथ नालन्दा से चीन गया। उसने 53 ग्रन्थों का अनुवाद किया।

तिब्बत प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति के प्रभाव में रहा है। नेपाल से शांति–रक्षित और उद्यान से पद्मसंभव नामक विद्वान् तिब्बत पहुँचे और उन्होंने वहाँ तिब्बती लामा धर्म की नींव रखी। उन्होंने वहाँ संस्कृत ग्रंथों का प्रचार किया, साथ ही उनका अनुवाद करने के लिए वहाँ विद्वान् तैयार किए।

धर्म

भारतीय संस्कृति से प्रभावित भाषा और साहित्य का प्रचार विश्व के जिन क्षेत्रों में देखा गया है, वहाँ भारत के धार्मिक विचारों तथा व्यवहारों ने लोगों के मन पर अपना पूर्ण अधिकार कर लिया था। बर्मा और स्याम में बौद्ध धर्म प्रधान था। जहाँ बौद्ध धर्म प्रधान था वहाँ सभी हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियाँ भी पायी गई हैं। यद्यपि त्रिमूर्ति अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और शिव की पूजा प्रचलित थी, परन्तु शिव की पूजा मुख्य रूप से होती थी। भारतीय धर्म एवं विचारों के परिचय के साथ यह न समझा जाए कि वहाँ के मूल विश्वास और विधान नष्ट हो गये। हाँ, कुछ तो मिटे पर कुछ अधिक विकसित होकर वहाँ के जन जीवन में घुल–मिल गये। कुछ अवस्थाओं में तो पुराने विश्वास और रीति रिवाजों ने नये पंथों को भी प्रभावित किया। इसका एक श्रेष्ठ उदाहरण जावा की बहुत लोकप्रिय मूर्ति 'भटार गुरु' है। इस मूर्ति की लोकप्रियता देखकर अनुमान लगाया जाता है कि शायद हिन्देशिया के कोई मूल देवता इसमें मिल गये हों। कुछ लोग इसे ऋषि अगस्त्य का प्रतीक मानते हैं, जिसकी लोकप्रियता जावा में मिले अनेक अभिलेखों से प्रकट होती है।

कम्बुज के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि अनेक विद्वान् लोग भारत से कम्बुज जाते थे और वहाँ सम्मान प्राप्त करते थे। वहाँ के कई विद्वान् लोग भारत आते थे। उदाहरण के लिए हम शिवसोम को ले सकते हैं जो वहाँ के राजा इन्द्रवर्मन के गुरु थे। इन्होने भगवत् शंकर, जो शंकराचार्य हो सकते हैं, के साथ शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया था।

दूसरी मुख्य विशेषता आश्रमों की संख्या है, जो सारे कम्बुज में फैली थी। राजा यशोवर्मन ने 100 आश्रम स्थापित किये थे। इन आश्रमों में रहने वाले लोगों एवं वहाँ के विद्यार्थियों का पूरा ध्यान रखा जाता था। बच्चों, वृद्धों, गरीबों व असहायों का भी पालन उन आश्रमों में किया जाता था। इन आश्रमों ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विस्तार का काम किया।

यह भी जानें –

ऐतिहासिक युग में आते हुए हम 254 ई. पूर्व पर पहुँचते है, तब हम देखते हैं कि अशोक ने तीसरी बौद्ध संगीति (समागम) बुलाई तथा इसके बाद उसने यवन, सुवर्णद्वीप (हिन्देशिया) और लंका (ताम्रपर्णी अथवा सिंहल) आदि सुदूर देशों में दूतमंडल भेज कर और विषेषतः लंका में अपने पुत्र और पुत्री को भारतीय धर्म–दर्शन (बौद्ध धर्म) के स्थाई प्रचारक के रूप में नियुक्त करके उसने वृहत्तर भारत के निर्माण में एक बड़ा कदम उठाया।

समाज

वर्ण व्यवस्था जो भारतीय सभ्यता एवं समाज का मूल आधार था, वह भारतीय संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में हुए प्रसार के कारण वहाँ भी स्थापित हुई। परन्तु जिस प्रकार बाद के समय में भारत में वर्ण व्यवस्था के मूल स्वरूप में परिवर्तन आया, वैसा वहाँ की संस्कृति में नहीं हुआ। बाली और कम्बोज के निवासियों में जो जाति व्यवस्था का स्वरूप आज दिखता है, उसे हम भारत की प्राचीन वर्ण व्यवस्था का उदाहरण समझ सकते हैं।

विवाह का आदर्श, विभिन्न प्रकार की रस्में, उनका स्वरूप और वैवाहिक संबंध लगभग भारत के समाज की तरह ही थे। सती–प्रथा भी प्रचलित थी। भारत के प्राचीन समाज की तरह ही वहाँ भी पर्दा–प्रथा नहीं थी। भारत की ही तरह स्त्री को अपना पति चुनने का अधिकार था।

जुआ, मुर्गों की लड़ाई, संगीत, नृत्य और नाटक लोगों के मनोरंजन के प्रमुख साधन थे। जावा में नाटक का लोकप्रिय रूप 'छाया नाट्य' है जो 'वयंग' कहलाता है। 'वयंग' के कथानक मुख्यतः रामायण और महाभारत से लिए गये हैं। जावा निवासियों द्वारा इस्लाम धर्म मानने के बावजूद आज भी ये खेल वहाँ उतने ही लोकप्रिय एवं प्रचलित है, जो भारतीय संस्कृति की व्यापकता का परिचायक है।

भारत की तरह ही वहाँ के समाज का मुख्य खाद्य चावल और गेहूँ ही था। वहाँ पान खाना भी प्रचलन में था। आभूषण व वस्त्रों का पहनने का प्रकार भी भारत की ही तरह था।

कला

जहाँ–जहाँ भारतीय संस्कृति का प्रभाव रहा, भारत की तरह वहाँ सभी जगह कला भी धर्म से प्रभावित रही है। यहाँ की कला का शुरूआती रूप पूर्णतः भारतीय ढ़ंग का है। वहाँ की प्राचीन कलाकृतियाँ, वहाँ जाकर बसने वाले भारतीय कलाकारों की ही कृतियाँ मानी जाती हैं। वहाँ की प्राचीन मूर्तियों और मंदिरों का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जा रहा है।

जावा के मंदिर

जावा का सबसे महत्त्वपूर्ण वास्तुशिल्प वहाँ का 'बरोबोदूर' मंदिर है, जो 750 से 850 ई. के बीच शैलेन्द्रो के संरक्षण में बना था। इस भव्य भवन में एक के ऊपर एक नौ मंजिलें बनी हुई है तथा सबसे ऊपर एक घंटानुमा स्तूप है। इसका सौन्दर्य अकथनीय है। 'बरोबोदूर' की दूसरी उल्लेखनीय विशेषता इसके बरामदों में बनी मूर्तियों की पंक्तियाँ हैं। मूर्तियों की पंक्तियों की कुल ग्यारह श्रृंखलाएँ है और कुल संख्या लगभग 1500 है। 'बरोबोदूर' की बुद्ध की मूर्तियाँ और 'मेनदूत' की बोधिसत्व मूर्तियाँ की स्वतंत्र

मूर्तियाँ जावा की मूर्तिकला के सुन्दरतम नमूनों में मानी जा सकती है। चेहरे पर दैवी का आध्यात्मिक भाव इन मूर्तियों की प्रमुख विशेषता है। निःसन्देह भारत की गुप्तकालीन मूतिकला से ही इन मूर्तियों की रचना करने की प्रेरणा प्राप्त हुई होगी।

यद्यपि जावा का कोई अन्य मंदिर 'बरोबोदूर' के मंदिर जितना विशाल नहीं है और न ही उसके जैसी भव्यता पा सका, तथापि वहाँ की प्रम्बनन की घाटी में स्थित 'लारो–जंगरंग' के मन्दिर का स्थान द्वितीय माना जा सकता है। इसमें आठ मुख्य मंदिर हैं। उनमें शिव की मूर्ति प्रतिष्ठित हैं। उसके उत्तर के मंदिर में विष्णु की और दक्षिण के मन्दिर में ब्रह्मा की मूर्ति है। इसके बरामदे के भीतरी भाग में उत्कीर्ण मूर्तियों के 42 फलक हैं, जिनमें रामायण के आरम्भ से लेकर लंका पर आक्रमण तक के दृश्य अंकित हैं। हम कह सकते हैं कि 'बरोबोदूर' और 'लोरो–जंगरंग' जावा और भारतीय कला के शास्त्रीय और रोमांचक स्वरूपों को व्यक्त करते हैं।

कम्बुज के मंदिर

कम्बुज में 'अंगकोर' नामक स्थान के आरम्भिक वास्तुशिल्पों में कुछ मंदिर हैं, जिनकी भारतीय मंदिरों से बहुत कुछ साम्यता है। मंदिर के मध्य और किनारे के शिखर उत्तर भारतीय शैली के हैं। इस ढ़ंग का सर्वोत्तम और पूर्ण नमूना अंगकोर वाट में है। शिखरों को चारों दिशाओं की ओर मुँह किये मुण्डों द्वारा ढ़ककर एक नवीनता उत्पन्न की गयी है। मन्दिरों और नगरों के चारों ओर गहरी खाई, उसके ऊपर पुलनुमा रास्ता और रास्ते के दोनों ओर साँप के शरीर को खींचते हुए दैत्यों की शक्लें बनी हुई है, जो पुल के जंगले का काम करती हैं। संसार की वास्तुकला में यह निश्चय ही अनोखी और मौलिक वस्तुएँ हैं।

अंगकोर वाट का विष्णु मन्दिर

इन भवनों की विशालता का अनुमान इनकी विशाल लम्बाई व चौड़ाई से लगा सकते हैं। मंदिर की चारदीवारी के बाहर 650 फीट चौड़ी खाई है एवं 36 फीट चौड़ा पत्थर का रास्ता है। खाई मन्दिर के चारों ओर है, जिसकी लम्बाई लगभग 2 मील है। पश्चिम फाटक से पहले बरामदे तक की सड़क 1560 फीट लम्बी और 7 फीट ऊँची है। अन्तिम मंजिल का केन्द्रीय शीर्ष जमीन से 210 फीट की ऊँचाई पर है।

आनन्द मन्दिर

बर्मा में सर्वोत्तम मन्दिर पेगन का 'आनन्द' मन्दिर है। यह 564 वर्गफीट के चौकोर आँगन के बीच

में स्थित है। मुख्य मंदिर ईंटों का बना हुआ और वर्गाकार है। भव्य अनुपात और व्यवस्थित नियोजन के साथ ही 'आनन्द' मन्दिर का सौन्दर्य यहाँ पर उत्कीर्ण पत्थर की असंख्य मूर्तियों और दीवार पर लगे मिट्टी के चमकीले फलकों से बढ़ गया है। पत्थर की उत्कीर्ण मूर्तियों की संख्या 80 है और उनमें बुद्ध के जीवन की मुख्य घटनाएँ अंकित हैं। यह मन्दिर भारतीय शैली में ही विकसित हुआ है। उस ढ़ंग के मन्दिर बंगाल में पाये जाते हैं और सम्भवतः उन्ही से 'आनन्द' मन्दिर के नियोजन की प्रेरणा मिली होगी। इस मन्दिर के संदर्भ में ड्यूरोसाईल ने विशेष अध्ययन किया है। उनका मत है–

"जिन वास्तुकारों ने 'आनन्द' का नियोजन और निर्माण किया, वे निःसंदेह भारतीय थे। शिखर से लेकर कुर्सी तक प्रत्येक वास्तु तथा बरामदों में पायी जाने वाली अनेक प्रस्तर मूर्तियाँ तथा कुर्सियों और गलियारों में लगे मिट्टी के फलकों में भारतीय कला–कौशल और प्रतिभा की अमिट छाप दिखाई पड़ती है। इस दृष्टि से हम यह मान सकते हैं कि आनन्द का मन्दिर बर्मा की राजधानी में बना होने पर भी एक भारतीय मन्दिर ही है।"

निश्चित रूप से ऊपर वर्णित विभिन्न बिन्दुओं को पढ़ने के बाद हमने जाना कि भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में गहरा प्रभाव रहा है तथा वह प्रभाव वहाँ के सामाजिक जीवन पर आज भी दृष्टिगोचर हो रहा है। जिन देशों की ऊपर चर्चा की गई हैं, उनके अतिरिक्त भी अनेक क्षेत्रों पर हमारी संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा। उदाहरण के लिए सुरीनाम, ईरान एवं कई अफ्रीका के देशों पर भी हमारी संस्कृति का गहरा प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

गतिविधि–
भारतीय संस्कृति के विभिन्न देशों पर पड़े प्रभाव को जानें एवं उसके उदाहरण अपनी नोटबुक में लिखें।

शब्दावली

हिन्देशिया	–	जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, बाली आदि द्वीप समूह
हिन्द–चीन	–	पूर्वी एशिया के वियतनाम कम्बोडिया आदि राष्ट्र
कम्बुज	–	कम्बोडिया
स्याम	–	थाईलैण्ड
चम्पा	–	अन्नाम्
बर्मा	–	म्यांमार
उत्कीर्ण करना	–	खोद कर लिखना

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक व दो के सही उत्तर कोष्ठक में लिखिए –

1. चम्पा में कितने संस्कृत अभिलेख मिले है ?

   (अ) 50 से अधिक (ब) 70 से अधिक

   (स) 150 से अधिक (द) 100 से अधिक ( )

2. कम्बुज के कौनसे नरेश ने कुल 326 छन्दों के चार अभिलेखों की रचना की?

   (अ) जयवर्मन (ब) यशोवर्मन

   (स) राजवर्मन (द) बहुवर्मन ( )

3. जावा की सबसे लोकप्रिय मूर्ति का क्या नाम है ?
4. भारतीय वर्ण व्यवस्था में वर्णित चार वर्णों के नाम लिखें।
5. वयंग क्या है ? स्पष्ट करें।
6. 'बरोबोदूर' व लोरो–जंगरंग' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो ।
7. अंगकोर वाट के मन्दिर पर टिप्पणी लिखो।
8. भाषा साहित्य के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति के प्रभाव का वर्णन करो।
9. 'समाज एवं धर्म' के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति के प्रभाव का वर्णन करो।
10. बर्मा के 'आनन्द 'मन्दिर का वर्णन करते हुए ड्यूरोसाईल के कथन का विश्लेषण करें।

गतिविधि–

1. विश्व के मानचित्र में उन स्थानों को चिन्हित करें, जहाँ भारतीय संस्कृति का प्रभाव रहा हैं।
2. वृहत्तर भारत की सीमाओं को मानचित्र में प्रदर्शित करें।